REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

'संत तुकाराम के अभंगों में प्रासंगिकता'

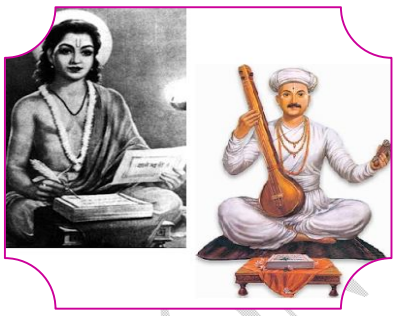

प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे
सा. प्राध्यापक , एम.ए.एम.एड्, नेट, पीएच.डी.
कला,वाणिज्य,एवं विज्ञान महाविद्यालय, शंकरनगर जि. नांदेड.

प्रास्ताविक :

साहित्य के विभिन्न आयाम होते है । साहित्य का उद्‌भव जब से हुआ है तब से विशिष्ट काल में एक वैचारिकता का उद्‌भव हुआ है । हिंदी साहित्य में वीर, रीति, हास्य, व्यंग्य, आदि प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हुई है । उसीके साथ ही साथ प्रगतिवाद, छायावाद, प्रयोगवाद, आदि की तरह भक्ति यह भी काव्य की प्रवृत्ति रही है । भक्ति यह साहित्य में भाव प्राचिन है । हिंदी साहित्य में भक्ति का कारवां दक्षिण से मध्ये भारत होकर उत्तर भारत तक विस्तारित हुआ । एक समय में भक्ति इस भाव का पुरे भारत में विस्तार हुआ। इसीलिए मध्यकाल को भक्तिकाल के नाम से पहचाना जाता है । हिंदी के साथ ही अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी भक्ति की स्थापना हुई है । संतों तथा उनके विचारों कों प्रसारित करने के लिए विभीन्न भाषाओं में रचनाएँ हुई है । जिसमे अभंग, गवलन, भारुड, आदि आते है । महाराष्ट्र में भी भक्ति की एक विशिष्ट परम्परा रही है । चक्रधर स्वामी, महात्मा बसवेश्वर, संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव, मुक्ताबाई, जनाबाई, आदि संतों ने सामाजिक एवं धार्मिक प्रबोधन के लिए अभंगों एवं पदों की रचनाएँ की है । संत तुकाराम भक्तिकाल के एक महत्वपूर्ण संत है । भक्त के साथ ही साथ तुकाराम एक समाजसुधारक भी है । सामाजिक एवं धार्मिक उन्नती के लिए संत तुकाराम का योगदान महत्वपूर्ण रहा है । उनका कार्य समाज एवं देश हित में था । परिणामस्वरुप उनके अभंग सामाजिक रितिरिवाजों का एवं कर्मठ, ढोंगी प्रथाओं का विरोध दर्शाते है । अतः संत तुकाराम हमारे समाज के लिए एक प्रमुख आधार स्तंभ है ।

संत तुकाराम का परिचय :

महाराष्ट्र के पाँच प्रमुख संत कवियों में संत तुकाराम चौथे क्रमांक पर आते है । संत तुकाराम के जीवन के प्रारंभ से लेकर अंत तक विदेशी अर्थात मुस्लीम शासकों का विस्तार होता रहा है । तुकाराम के जन्मतिथि के बारे में विदवानों में मतभेद पाये जाते है । इतिहासाचार्य श्रीयुत राजवाडे जी ने उनकी जन्मतिथि 1490 में स्वीकार की है । और उनका प्रयाण 1649 में हुआ । तुकाराम के पूर्वजों से चली आ रही वैष्णव पंथी परम्परा बहुत ही पुरानी है । उनका परिवार पंढरपूर के विट्ठल का उपासक रहा है। यही कारण है कि, तुकाराम महाराज भी श्री विट्ठल को अपना आराध्य मानते थे । पंढरपूर की वारी में सहभाग होकर विट्ठल का गुणगान गाते थे । तुकाराम विट्ठल को अपना सबकुछ मानते थे, वे कहते है कि,

" शुध्द बीजापोटी । फळे रसाळ गोमटी
सहज वडिला होती सेवा । म्हणोनि पुजितो या देवा ।
पंढरीची वारी आहे माझ्या घरी । आणिक न भरी तीर्थवृत । 1"

तुकाराम के पूर्वज वैश्य थे । इसी कारण व्यवसाय से व्यापारी होने के कारण उनके पूर्वज देहू में रईस घराने में से एक थे । उनके देहू इस गाँव में जमीन–जायदाद थी । उनका पुरा नाम तुकाराम बोल्होबा अंबिले (मोरे) यह था । उनकी माता का नाम कनकाई, प्रथम पत्नी रखमाबाई और बेटा संताजी थे । जब तुकाराम 20

उम्र के थे तब अकाल पडा जिसमें उनका पुरा परिवार बिछड गया । भूक से बेहाल होकर उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए । इस घटना से तुकाराम गंभीरता से प्रभावित हुए । उनके मन में वैराग्य के विचार तीव्र गती से चलने लगे । कुछ ही सालों के बाद तुकाराम का दुसरा विवाह जिजाई से हुआ । जिजाई के माता–पिता रईस घराने के थे । अंतः जिजाई को 6 बच्चे हो गए । जिसमे महादेव, विट्ठल,नारायण, लडके और काशी, भगिरती, गंगा आदि लडकीयाँ हुई । जिजाई सवभाव से उग्र थी, कभी–कभार क्रोध आने पर झगडे करती थी । जब भी बिकट परिस्थिती उत्पन्न हो जाती थी तब तुकाराम ज्ञानेश्वरी, नामदेव के अभंग, पुराण इनका अध्ययन करते थे । उनके विचार से परमेश्वर के रुप की अनुभूति लेना है, तो वह रास्ता भक्तिमार्ग । भक्ति इस साधना से भक्त अपने आराध्य का दर्शन कर सकता है । तुकाराम पंढरपूर के पांडुरंग को ही अपना गुरु मानते है । उनको लेखन की प्रेरणा संत नामदेव से मिली हैं । गुरु के बिना उदधार नही होता ऐसी उनकी श्रध्दा थी । इसी लिए गुरु के मार्गदर्शन में वे अपना कार्ये करना चाहते थे । परंतु श्री पांडुरंग और नामदेव तुकाराम के सपने मे आकर जगाते है । नामदेव तुकाराम को विट्ठल पर अभंग लिखने की प्रेरणा देते है । अपने गुरु का आदेश मानकर तुकाराम ने .अभंग लिखे है । आगे चलकर तुकाराम गाथा को लोकप्रियता मिली । इस प्रकार तुकाराम महाराज ने अनेक विषयों पर अभंग लिखे है ।

तुकाराम के अभंग :

संत तुकाराम द्वारा लिखीत साहित्य बहुमुखी प्रतिभा संपन्न है । मनुष्य के जीवन उपदेश, व्यवहार उपदेश, नीतिपरक, अन्य विषयों पर अभंग लिखे है । उनके अभंगो में सामाजिक स्थिति का सुंदर भाष्य किया गया है । अतः तुकाराम के अभंगों में विविध आयाम निम्नता से आते है ।

दार्शनिक तत्वज्ञान और भक्ति :

तुकाराम एक भक्त के साथ ही साथ दार्शनिक तत्वज्ञानी भी है । उनके अभंगों में सगुण –निर्गुण, माया, अदवैत आदि का विवेचन हुआ है । तुकाराम अपना नाता प्रथम विट्ठल तदनंतर मानव समाज, वृक्षवल्ली, जडजगत, और अंत में सगुण और निर्गुण के साथ जोडते है । तुकाराम अपने अभंगों में भी इश्वर का रुप समझाते है । भक्तों को राम की भक्ति करने का वे संदेश देते है ।

"ऐसा कर घर आवे राम । और धंदा सबछोर हि काम ।2"

जो भक्त सच्चे एवं श्रध्दासे राम की भक्ति करता हैं, वही सच्चा भक्त कहलाता है । परंतु राम की भक्ती छोडकर उनके नाम पर व्यवसाय करने वाले लोगों को उन्होंने फटकार भी लगाई है । उनके अनुसार भक्ती के नाम पर पाखंड को महत्व दिया जा रहा है । तुकाराम अभंग में कहते है की, मैं इस जगत के चराचर में हूँ ।

"तू माझा आकार । मी तों तुच निर्धार ।
मी तुजमाजी देवा । घेसी माझ्या अंगे सेवा ।" 3

इश्वर ने ही अपने जीवन को आकार योग्य बनाया है । अतः निर्माता का रुण चुकाना भक्त का कर्तव्य है । यह जो देह रुपी जीवन मुझे मिला है, उसे दीन–दलित, शोषित की सेवा के लिए अर्पित करना ही सेवा सबसे श्रेष्ठ है ।

"तीर्थांचे जे मूळ व्रतांचे जे फळ । ब्रम्हा ते केवळ पंढरीचे ।
जीवांचे जीवन सुखाचे सेजार । उभे कटी कर ठेवूनियाँ । 4"

तुकाराम महाराज के आराध्य दैवत पंढरपुर के श्रीविट्ठल है । अतः वे सभी तीर्थो मूल रुप पंढरपुर को मानते है । इस सृष्टि के रचयिता ब्रम्हा भी पंढरपूर में वास करते है । मनुष्य के जीवन को सुखी बनाने के लिए

विठोबा की भक्ति ही श्रेष्ठ है । जो भक्त तन–मन–धन से सात्विक भावों से युक्त भक्ति करता है, उसे श्री विट्ठल की कृपा प्राप्त होती है । अतः तुकाराम विट्ठल की भक्ति की महिमा का कथन करते है ।

सत्संग का महत्व :

मनुष्य का विकास एक दिन में नही होता । बाल्यावस्था से वृध्दावस्था तक विभीन्न अवस्थाओं से मनुष्य को जाना पडता है । मनुष्य जीवन की यात्रा में अनेक मित्र ,गुरु, शिष्य और भी कई घटक आते है । जिससे हमारा जीवन प्रभावित होता है । अच्छे विचारोंवाले मित्र एवं गुरु के सान्निध्य से व्यक्ति का विकास होता है । तुकाराम भी अपने जीवन में संतों एवं गुरु का महत्व बताते है ।

"श्री संताचिया माथा चरणांवरी । साष्टांग हे करी दंडवत
विश्रांती पावलो सांभाळउत्तरी । वाढले अंतरी प्रेम सुख । 5"

किसी भी अनजान बालक पर माँता एवं पिता की छत्रछाया होती है । उसी प्रकार व्यक्ति के विकास के लिए संतों का वैचारिक मार्गदर्शन आवश्यक होता है । माता–पिता के बाद गुरु का महत्व जीवन मे अधिक होता है । गुरु की कृपा से ज्ञान , प्रभुप्रेम की प्राप्ती होती है । जैसे –

"धन्य ते संसारी, दयावंत जे अंतरी
येथे उपकारासाठी, आले घर ज्यां वैकुंठी । 6"

माता–पिता के अभाव में बालक का जीवन संकट में होता है । उसी प्रकार मनुष्य को संसार अनेक संकटों का सामना करना पडता है । संतों के मार्गदर्शन से ही जीवन की चुनौतीयों का सामना आसानी से पार किया जा सकता है । संतों का अंतःकरण स्थिर एवं दृढ रहता है । जैसे –

"संताचिया गांवी प्रेमाचा सुकाळ, नाही तळमळ दुःख क्लशे
तेथे मी राहीन होऊनि माचक, घालतील भीक तेचिमज । 7"

संतों के जीवन में कितनी भी बाधाएँ आई वे डगमगाते नही है । विपदाओं का डटकर जवाब देते है । संतों के पास हर किसी के लिए करुणा एवं दया होती है । उनके चित में किसी भी प्रकार का भेदभाव नही होता ।

कर्मकांड एवं बाहय आडंबर का विरोध :

हम जिस समाज में रहते है उस समाज में अनेक बुरी एवं अनिष्ठ प्रथा एवं परम्पराएँ भी है । जिसके चलते समाज का नुकसान होता है । संत सामाजिक भेदभाव एवं कर्मकांड को ठुकराते है । संत तो सामाजिक समता के समर्थक होते है । वे अपने पंचविकारों पर भी जित प्राप्त कर लेते है । लेकिन स्वार्थी एवं ढोंगी भी संत होते है । जैसे –

"होऊनि संन्यासी भगवी लुगडी, वासना न सोडी विषयांची ।" 8

संतों को सामाजिक उन्नति के लिए कार्ये करते हुए देखा जाता है । स्वार्थ पूर्व के लिए भी कुछ लोग संन्यासी बन जाते है । भगवे वस्त्र पहनकर वैचारिक प्रबोधन करते है । लेकिन उन्हें अपने पंचविकारों पर वश करना नही आता। ऐसे ढोंगी संन्यासियों से दूर रहने का संदेश तुकाराम देते है । आंतरिक विचार जब तक सुधार नही जाते तब तक वे संत कहने लायक नही होते । ऐसे ढोंगी खुद को और समाज को भी फँसाते है । इन ढोंगीयो के कई प्रकार होते है । विविध रुपों में सामने आते है । जैसे –

" डोई वाढवूनि केश, भूतें आणिती अंगास
तरी ते नव्हती संतजन । तेथे नाही आत्मखुन। 9"

बाल बढाकर खुद को महान संत कहलानेवाले साधु, महात्मा, ढोंगियों से बचने का संदेश यहाँ पर दिया गया है । बाल बढाना, विविध प्रकार की मोहक कलाओं की प्रस्तुति यह संतो की विशेषता नही है । तुकाराम यही संदेश देते है कि, ऐसें ढोंगियों से बचकर रहना चाहीए ।

" एसे कैसे झाले भोंदु कर्म करोनि म्हणती साधु
अंगी लावुनिया राख, डोळे झांकुनि करिती पाप,। 10"

समाज में फँसाने एवं बुरी प्रवृत्ती वाले अनेक साधु–ढोंगियों की संख्या बढ गयी है । ऐसे ही ढोंगीयों का तुकाराम ने पर्दाफाश किया है । मनुष्य के जीवन की अंत में पाप और पुण्य की तुलना की जाती है । आज के युग में ढोंगीयों की संख्या लगातार बढती जा रही है । ढोंगी लोग अपने अंगों कों भस्म लगाकर मंत्रोच्चार करते है । बुरा काम करते समय भी इनकी आँख नही खुलती । अतः ऐसे लोगों को सतर्क करने का प्रयास तुकाराम महाराज ने किया है ।

सामाजिक विचार :

तुकाराम महाराज को भी जीवन व्यतित करते समय अनेक सामाजिक समस्याओं का शिकार होना पडा है । जाति, वर्ग, वंश, और कई भेद समाज में स्थापित है । तुकाराम खुद को अति शुद्र वर्ग से मानते है । तुकाराम मनुष्य के जीवकी सेवा को महत्वपूर्ण मानते है ।

1 सामाजिक एकता :– सामाजिक वर्ग व्यवस्था में शुद्रों को उनके अधिकारों से वंचित रखा गया था । शुद्र दुसरों की सेवा करके ही अपनी जीविका चलाते थे । दूसरों की सेवा करने का मौका मिले इसी कारण तुकाराम स्वयं को शुद्र कहते है । जैसे –

"अवघे गोपाल म्हणती या रे करुं काला ।
काय कोणाची शिदोरी ते पाहों दया मला ।
नका काही मागे पुढें ठेवु रे खरेच बोला ।11"

देवता के द्वार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को स्वीकार नही किया जाता। देवताओं के नाम पर पकाया गया प्रसाद हर किसी में बाँटा जाता है । तुकाराम कहते है कि, श्रीकृष्ण के जन्माष्टमी के अवसर पर बनाया प्रसाद सभी का है । अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि, तुकाराम सामाजिक एकात्मता के प्रबल समर्थक है ।

2 सामुहिक भोजन :– गाँव, देहातों, कस्बों में सामाजिक त्योहार मनाए जाते है। इन त्योहारों के अवसर सामुहिक भोजन दिया जाता है । पंक्तियों में बैठे सभी लोगों में खाना बाँट दिया जाता है । जैसे –

" आता हेंचि जेऊ । सवें घेऊ सिदोरी ।
हरिनामाचा खिचडी काला । प्रेमें मोहिला साधने 12"

सामुहिक भोजन से सामाजिक एकता बढाने में बडी सहायता मिलता है । सामाजिक विषमता का निर्मुलन होने में मदत होती है ।

3 संत एवं शुद्र में एकता का भाव :

संतो का आचरण शुद्ध होता है । उनके विचार सात्विक होते है । उनके विचारों से दूसरों का भला होता है ।

"संताचे गुण दोष आणिता या मना । केलिया उगाणा सुकृताचा ।"

तुकाराम कहते हैं कि, संतों के पास समत्व की भावना होनी चाहिए । शुद्र जिस प्रकार सेवा को ही अपने जीवन का उद्देश मानते है उसी प्रकार संतों का भी जीवन उद्देश होता है। अतः संत ही शुद्र है । शुद्र ही संत है । सेवाभाव जिसके पास है, वही श्रेष्ठ इश्वर का भक्त माना जाता है ।

संत तुकाराम ने समाज में अनेक सामाजिक विषमता एवं कर्मकांड, अपनी आँखो से देखा है । जो उन्हें देखा नही गया उनके प्रति अभंगों में आक्रोश प्रकट हुआ है । अतः संत तुकाराम सामाजिक आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले संत है ।

समारोप :

भक्तिकाल में भक्ति की परम्परा को जिवित रखना और कर्मकांड, आडम्बर का विरोध भी करना आवश्यक था । यह कार्ये संत तुकाराम ने किया । दिशाहीन समाज को सही रास्ता दिखाने का कार्ये उन्होंने किया है । उनके अभंगों के माध्यम से वे मनुष्य को पथप्रदर्शन का कार्ये करते है । अतः तुकाराम महाराज मनुष्य जाति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुए है ।

संदर्भ :

1 शोध तुक्याचा : डॉ. तु.द.जोशी पृष्ठ 02
2 शोध तुक्याचा : डॉ. तु.द.जोशी पृष्ठ 70
3 शोध तुक्याचा : डॉ. तु.द.जोशी पृष्ठ 79
4 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 120
5 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 127
6 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 130
7 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 137
8 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 105
9 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 106
10 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 107
11 कबीर और तुकाराम का सामाजिक दर्शन : डॉ. त्रिवेणी सोनेने पृष्ठ 406
12 कबीर और तुकाराम का सामाजिक दर्शन : डॉ. त्रिवेणी सोनेने पृष्ठ 407

LBP PUBLICATION